पाठ - 3
नमाज़ का समय

الدرس الثالث - هندي
أوقات الصلاة

1. जुहर का समय सूरज ढलने से लेकर साया की लम्बाइ उस चाज़ क बराबर हान तक होता है।
2. अस्र का समय साया की लम्बाई उस चीज़ के बराबर होने से लेकर सूरज डूबने (सूर्यास्त) तक रहता है।
3. मग़रिब की नमाज़ का समय सूरज डूबने से लेकर पच्छिम की लाली समाप्त होने तक होता है।
4. इशा की नमाज़ का समय पच्छिम की लाली समाप्त होने से लेकर आधी रात तक होता है।
5. फजर की नमाज़ का समय तुलूए फजर से लेकर सूर्य उदय होने तक रहता है।

जिन औक़ात में नमाज़ पढ़ना मना है

कुछ वक़्त ऐसे हैं जिन में नमाज़ पढ़ना जायज़ नहीं है,
1. फ़ज्र की नमाज़ के बाद सूरज उगने और उसके एक नेज़ा ऊंचा होने तक यानी लगभग सूर्य उदय के दस मिनट बाद तक।
2. दोपहर के समय जब सूरज सर पर आ जाता है और उसका पता इससे चलता है कि साया रुक जाता है। यहां तक कि सूरज पश्चिम की ओर झुक जाए।
3. अस्र की नमाज़ के बाद से सूरज डूबने तक। अलबत्ता इन औक़ात में कुछ नमाज़ें अदा की जा सकती हैं। जैसे तहैय्यतुल मस्जिद, नमाज़े जनाज़ा, नमाज़े ग्रहण, तवाफ़ की दो रकअतें, और वुज़ू के बाद की दो रकअतें आदि।
इसी तरह इन औक़ात में छूटी हुई फर्ज़ नमाज़ों को भी पढ़ा जा सकता है। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया है: जो किसी नमाज़ को भूल गया हो, या उसे नींद आ गयी हो, तो उसका कफ्फारा यह है कि जब उसे याद आए, तभी उसे पढ़ ले , (, बुखारी 597, मुस्लिम 684)
इसी तरह फ़ज्र की सुन्नत की क़ज़ा का मसला है। इसी तरह जुहर की सुन्नत को जो वक़्त पर न पढ़ सका हो, उसके लिए उसे अस्र के बाद क़ज़ा करना जायज़ है

ऐसी जगहें जहां नमाज़ सही नहीं होतीं

कब्रिस्तान अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया :
पूरी ज़मीन मस्जिद (सज्दा करने की जगह) है, सिवाए हम्माम और क़ब्रिस्तान के। इसे इमाम बुखारी, मुस्लिम, अबु दाऊद, तिर्मिज़ी और इमाम नसई ने रिवायत किया है अलबत्ता क़ब्रिस्तान में जनाज़े की नमाज़ जायज़ है।
1. क़ब्र की ओर रुख़ करके नमाज़ पढ़ना ।अबू मर्सद गनवी रजियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि मैं ने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को फरमाते सुना :क़ब्रों का रुख़ करके नमाज़ न पढ़ो और न ही उन पर बैठा करो, (मुस्लिम 973)
3. ऊंट का बाड़ा, वह जगहें जहां ऊंट रहते है। इसी तरह नापाक जगहों में भी नमाज़ नहीं होती है।